

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 18-09-2024

विषय सूची

- सूक्ष्म लिंग भेदभाव पर चिंताएँ
- अमेरिका-भारत रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी
- भारत का स्वर्ण आयात दोगुना हुआ
- भारतीय राज्यों का सापेक्ष आर्थिक प्रदर्शन
- सिग्नल मॉड्यूलेशन
- सतत कृषि प्राप्त करने के लिए आवश्यक उपाय
- संक्षिप्त समाचार**
- कर्मा महोत्सव
- पेरियार ई.वी. रामासामी
- ध्रुवीय भँवर
- खाता एग्रीगेटर (AA) फ्रेमवर्क
- रंगीन मछली ऐप
- ऑनलाइन सूचना और डेटाबेस एक्सेस या पुनर्प्राप्ति (OIDAR) सेवाएँ
- क्लेप्टोपैरासाइटिज्म
- बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन (BWM) नियम, 2022
- खेलों में डोपिंग के विरुद्ध यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

सूक्ष्म लिंग भेदभाव पर चिंताएँ

सन्दर्भ

- भारत के उपराष्ट्रपति ने शेषशक्ति 2024 कार्यक्रम में अपने संबोधन के दौरान समाज में व्याप्त सूक्ष्म लैंगिक भेदभाव पर ध्यान देने पर बल दिया।

सूक्ष्म लिंग भेदभाव का भिन्न रूप

- **व्यावसायिक भूमिकाओं में लैंगिक रूढ़िवादिता:** भारत में विभिन्न रोजगारों को अभी भी पुरुष या महिला की भूमिका के रूप में देखा जाता है। यह रूढ़िवादिता नियुक्ति प्रथाओं, कैरियर की प्रगति और यहां तक कि पेशेवर वातावरण में कार्यों के आवंटन के तरीके को भी प्रभावित करती है।
 - उदाहरण के लिए, इंजीनियरिंग, रक्षा और निर्माण को प्रायः पुरुष-प्रधान क्षेत्र माना जाता है, जबकि शिक्षण, नर्सिंग और देखभाल की भूमिकाएं सामान्यतः महिलाओं के लिए आरक्षित होती हैं।
- **निर्णय लेने की स्थिति:** सूक्ष्म लैंगिक भेदभाव तब प्रकट होता है जब महिलाओं को महत्वपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से व्यवस्थित रूप से बाहर रखा जाता है, या जब उनकी राय को समान महत्व नहीं दिया जाता है।
 - "ग्लास सीलिंग (glass ceiling)" बनी हुई है, जिससे महिलाओं के लिए शीर्ष प्रबंधन पदों तक पहुंचना कठिन हो गया है।
- **कार्यस्थल में सूक्ष्म आक्रामकता:** सूक्ष्म लिंग भेदभाव प्रायः सूक्ष्म आक्रामकता का रूप ले लेता है - छोटी, रोज़मर्रा की मौखिक या गैर-मौखिक अवमानना।
- **घरेलू जिम्मेदारियाँ:** भले ही अधिक महिलाएँ कार्यबल में प्रवेश करती हैं, फिर भी उनसे घरेलू कार्य का बड़ा भाग संभालने की उम्मीद की जाती है।
 - लैंगिक समानता के बारे में औपचारिक चर्चाओं में इस दोहरे भार को प्रायः नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन यह महिलाओं के पेशेवर विकास में एक बड़ी बाधा बनी हुई है।
- **शिक्षा और कैरियर मार्गदर्शन:** लड़कियों को सुरक्षित या परिवार-अनुकूल पेशे चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, बजाय इसके कि उन्हें प्रौद्योगिकी या उद्यमिता जैसे क्षेत्रों की ओर किया जाए, जिन्हें अधिक पुरुष-प्रधान माना जाता है।

इस मुद्दे के समाधान के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- **स्थानीय शासन में महिलाओं के लिए आरक्षण:** 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधन, जो पंचायतों तथा नगर पालिकाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करते हैं, बुनियादी स्तर पर महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक रहे हैं।
- **मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017:** कार्यस्थल पर भेदभाव को कम करने के लिए, मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 ने सवेतन मातृत्व अवकाश को 12 से बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दिया।
- **STEM पहल में महिलाएँ:** STEM क्षेत्रों में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व को देखते हुए, सरकार ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न छात्रवृत्तियाँ, परामर्श कार्यक्रम तथा महिला वैज्ञानिक योजना जैसी पहल शुरू की हैं।

- **लिंग बजट:** लिंग बजट सरकार द्वारा लैंगिक समानता पर सार्वजनिक व्यय के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण उपकरण है।
 - बजटीय निर्णयों में लैंगिक दृष्टिकोण को सम्मिलित करके, भारत धीरे-धीरे स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार जैसे विभिन्न क्षेत्रों में लैंगिक असमानताओं को दूर करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।
- **स्टैंड-अप इंडिया योजना:** यह वित्तपोषण तक आसान पहुँच प्रदान करके महिलाओं के बीच उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करती है। इसका उद्देश्य महिलाओं के नेतृत्व में स्वरोजगार और व्यावसायिक उपक्रमों को बढ़ावा देना है।
- **मुद्रा ऋण:** यह विशेष रूप से महिला उद्यमियों के लिए ऋण प्रदान करता है। यह महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों और स्टार्टअप के लिए वित्तीय सहायता की सुविधा प्रदान करता है।

आगे की राह

- जबकि भारत ने कानूनों तथा नीतियों के माध्यम से लैंगिक समानता को औपचारिक रूप देने में बड़ी प्रगति की है, लैंगिक भेदभाव के सूक्ष्म रूप अभी भी व्यापक हैं और सामाजिक संरचनाओं में गहराई से समाहित हैं।
- इन पूर्वाग्रहों को संबोधित करने के लिए न केवल नीतिगत हस्तक्षेपों को सम्मिलित करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, बल्कि लैंगिक भूमिकाओं को लेकर हमारी धारणा में सामाजिक परिवर्तन भी शामिल है।
- निजी क्षेत्र में बढ़ती जागरूकता और सक्रिय पहलों के साथ-साथ निरंतर सरकारी प्रयास, सच्ची लैंगिक समानता के लिए इन सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण बाधाओं को दूर करने में महत्वपूर्ण हैं।

Source: [PIB](#)

अमेरिका-भारत रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी

समाचार में

- संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच सामरिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी (SCEP) मंत्रिस्तरीय बैठक में स्वच्छ ऊर्जा नवाचार, ऊर्जा सुरक्षा तथा स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण में सहयोग को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

परिचय

- बैठक में पांच मुख्य स्तंभों में प्रमुख उपलब्धियों तथा भविष्य की पहलों की समीक्षा की गई:
 - बिजली और ऊर्जा दक्षता,
 - जिम्मेदार तेल और गैस,
 - नवीकरणीय ऊर्जा,
 - उभरते ईंधन और प्रौद्योगिकियां,
 - सतत विकास।

- अमेरिका-भारत रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी (SCEP) स्वच्छ ऊर्जा पर द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाती है, जिसमें बिजली, ऊर्जा दक्षता, नवीकरणीय ऊर्जा, उभरती प्रौद्योगिकियों और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

SCEP की मुख्य विशेषताएं

- **अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकी कार्रवाई मंच (RETAP):** अगस्त 2023 में लॉन्च किया गया, RETAP हाइड्रोजन, लंबी अवधि के ऊर्जा भंडारण, अपतटीय पवन और भूतापीय प्रौद्योगिकियों के लिए कार्रवाई योग्य रोडमैप विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **ऊर्जा भंडारण कार्य बल:** इस सार्वजनिक-निजी पहल का उद्देश्य लिथियम-आयन प्रौद्योगिकियों से परे लंबी अवधि के ऊर्जा भंडारण विकल्पों की खोज करते हुए नीति, सुरक्षा और नियामक मुद्दों को संबोधित करना है।
 - असम और हरियाणा में बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) जैसी परियोजनाएं पहले से ही चल रही हैं, जो ग्रिड एकीकरण और नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं।
- **बिजली वितरण का आधुनिकीकरण:** बैठक में स्मार्ट मीटरिंग, बिजली बाजार सुधार और 2030 तक भारतीय रेलवे के शुद्ध-शून्य उत्सर्जन लक्ष्य में भारत के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया।
 - भारत ने चौबीसों घंटे 1.5 गीगावाट अक्षय ऊर्जा की खरीद में अग्रणी भूमिका निभाई है।
- **सतत विमानन ईंधन (SAF) और परिवहन विद्युतीकरण:** SAF अनुसंधान एवं विकास, प्रमाणन और साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए एक व्यापक कार्यशाला शुरू की गई।
 - भारत की पीएम ई-बस सेवा योजना का लक्ष्य 10,000 इलेक्ट्रिक बसों की तैनाती करना है, जिससे मध्यम और भारी-भरकम परिवहन में विद्युतीकरण में तेजी आएगी।
- **कार्बन कैप्चर, उपयोग और भंडारण (CCUS) और मीथेन कमी:** भारत के हाइड्रोजन कार्बन महानिदेशालय के साथ सहयोग के माध्यम से तेल और गैस क्षेत्र में मीथेन कमी प्रयासों के साथ-साथ CCUS प्रौद्योगिकियों और नियामक ढांचे पर सहयोग में वृद्धि।
- **सार्वजनिक-निजी सहयोग:** नीतियों को आकार देने और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी लागत को कम करने में सार्वजनिक-निजी संवादों की भूमिका पर बल दिया गया।

स्वच्छ ऊर्जा की आवश्यकता

- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण क्षरण से निपटने में सहायता मिलती है।
- सीमित जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होती है।
- स्वच्छ ऊर्जा वायु और जल प्रदूषण को कम करती है, जिससे समग्र स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होता है।
- नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश से रोजगार के अवसर सृजित होते हैं और दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।
- स्वच्छ ऊर्जा (SDG 7) और जलवायु कार्रवाई (SDG 13) जैसे SDG को प्राप्त करने में भूमिका निभाने में सहायता मिलती है।

पहल

- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA):** भारत के नेतृत्व में एक वैश्विक गठबंधन, जो सौर-समृद्ध देशों में सहयोगी प्रयासों के माध्यम से सौर ऊर्जा को बढ़ावा देता है।

- **अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकी कार्रवाई मंच (RETAP):** हाइड्रोजन, ऊर्जा भंडारण, अपतटीय पवन और भूतापीय प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित एक यूएस-भारत पहल।
- **ग्रीन हाइड्रोजन मिशन (भारत):** विशेष रूप से भारी उद्योगों और परिवहन में स्वच्छ ऊर्जा विकल्प के रूप में ग्रीन हाइड्रोजन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया।
- **यूरोपीय संघ की ग्रीन डील:** स्वच्छ ऊर्जा निवेश और नीतियों के माध्यम से 2050 तक यूरोप को जलवायु-तटस्थ बनाने के उद्देश्य से यूरोपीय संघ की रणनीति।
- **PM KUSUM योजना (भारत):** कृषि में सिंचाई के लिए सौर ऊर्जा उत्पादन का समर्थन करती है, जिससे खेती के संचालन में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होती है।

Source: PIB

भारत का स्वर्ण आयात दोगुना हो गया

सन्दर्भ

- वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, अगस्त में सोने का आयात दोगुना से अधिक होकर 10.06 अरब अमेरिकी डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया।
 - इसका मुख्य कारण सीमा शुल्क में भारी कटौती तथा चल रही त्यौहारी मांग है।

भारत का स्वर्ण आयात

- देश के कुल आयात में सोने का भाग 5% से अधिक है।
- चीन के बाद भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सोने का उपभोक्ता है।
- आयात मुख्य रूप से आभूषण उद्योग की मांग को पूरा करता है।
- स्विट्जरलैंड सोने के आयात का सबसे बड़ा स्रोत है, जिसकी हिस्सेदारी लगभग 40% है, इसके बाद UAE (16% से अधिक) और दक्षिण अफ्रीका (लगभग 10%) का स्थान है।
- भारत का सोने का आयात, जिसका देश के चालू खाता घाटे (CAD) पर प्रभाव पड़ता है, अप्रैल-जुलाई 2024-25 के दौरान 4.23% घटा।
 - बजट 2024 में सरकार ने आयात शुल्क को 15% से घटाकर 6% कर दिया।

सोने की कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक:

- **आपूर्ति और मांग:** निवेश और औद्योगिक उपयोग दोनों के लिए सोने की उपलब्धता और इसकी मांग, कीमतों को सीधे प्रभावित करती है।
 - खनन उत्पादन में वृद्धि कीमतों को कम कर सकती है, जबकि उच्च मांग उन्हें बढ़ा सकती है।
- **मुद्रास्फीति:** सोने को प्रायः मुद्रास्फीति के खिलाफ बचाव के रूप में देखा जाता है। जब मुद्रास्फीति बढ़ती है, तो निवेशक अपनी क्रय शक्ति को बनाए रखने के लिए सोने की ओर आकर्षित होते हैं, जिससे कीमतें बढ़ जाती हैं।
- **ब्याज दरें:** कम ब्याज दरें सोने को रखने की अवसर लागत को कम करती हैं, जिससे यह निवेशकों के लिए अधिक आकर्षक हो जाता है। इसके विपरीत, उच्च दरें सोने की कीमतों को कम करती हैं।

- **भू-राजनीतिक स्थिरता:** राजनीतिक अनिश्चितता या संघर्ष निवेशकों को सोने में सुरक्षा की तलाश करने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे मांग और कीमतें बढ़ती हैं।
- **मुद्रा की मजबूती:** सोने की कीमत सामान्यतः अमेरिकी डॉलर में तय होती है। एक कमजोर डॉलर अन्य मुद्राओं के धारकों के लिए सोने को सस्ता बनाता है, जिससे संभावित रूप से मांग और कीमतें बढ़ सकती हैं।
- **केंद्रीय बैंक की नीतियाँ:** केंद्रीय बैंकों द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयाँ, जैसे कि सोने की खरीद या बिक्री, बाजार की कीमतों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। केंद्रीय बैंक अक्सर अपने भंडार के भाग के रूप में सोना रखते हैं।
- **वैश्विक आर्थिक स्थितियाँ:** आर्थिक मंदी या अनिश्चितताएँ सुरक्षित आश्रय के रूप में सोने की मांग को बढ़ाती हैं।

उच्च स्वर्ण आयात का प्रभाव

- **व्यापार संतुलन:** सोने के आयात में वृद्धि से देश का व्यापार संतुलन असंतुलित होता है, जिससे निर्यात से क्षतिपूर्ति न होने पर व्यापार घाटा बढ़ता है। इससे राष्ट्रीय मुद्रा पर दबाव पड़ सकता है।
- **मुद्रा मूल्य:** सोने के आयात का उच्च स्तर घरेलू मुद्रा के मूल्यहास का कारण बन सकता है, क्योंकि आयात के भुगतान के लिए विदेशी मुद्रा की मांग बढ़ जाती है।
- **मुद्रास्फीति:** यदि मुद्रास्फीति के विरुद्ध बचाव के रूप में सोने का आयात किया जा रहा है, तो इसकी बढ़ती मांग अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के दबाव में योगदान कर सकती है।
- **निवेश प्रवाह:** उच्च सोने का आयात एक सुरक्षित परिसंपत्ति के रूप में सोने में मजबूत निवेशक विश्वास का संकेत दे सकता है, जो लंबे समय में अधिक विदेशी निवेश आकर्षित कर सकता है।
- **संसाधन आवंटन:** बड़े पैमाने पर सोने के आयात से अन्य क्षेत्रों से वित्तीय संसाधन हट सकते हैं, जिससे समग्र आर्थिक विकास प्रभावित हो सकता है।

भारत में रत्न एवं आभूषण उद्योग

- अप्रैल-जून 2024 में भारत का रत्न एवं आभूषण निर्यात 6.87 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।
- कट और पॉलिश किए गए हीरे का निर्यात में सबसे अधिक भाग(53.47%) रहा, इसके बाद सोने के आभूषण (32.39%) और चांदी के आभूषण (3.36%) का स्थान रहा।
- जून 2024 में सोने के आभूषणों का निर्यात 608.01 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जबकि सोने के आभूषणों का आयात 88.61 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
- रत्न एवं आभूषणों के प्रमुख केंद्र हैं: सूरत, मुंबई, जयपुर, त्रिचूर, नेल्लोर, दिल्ली, हैदराबाद और कोलकाता।
- भारत का रत्न एवं आभूषण निर्यात 2027 तक 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की सम्भावना है।
- विकास और मूल्य संवर्धन की अपनी क्षमता के आधार पर, सरकार ने रत्न एवं आभूषण क्षेत्र को निर्यात संवर्धन के लिए फोकस क्षेत्र घोषित किया।

Source: IE

भारतीय राज्यों का सापेक्ष आर्थिक प्रदर्शन

सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (EAC-PM) द्वारा 'भारतीय राज्यों का सापेक्ष आर्थिक प्रदर्शन: 1960-61 से 2023-24' शीर्षक से पेपर जारी किया गया है।

परिचय

- यह दो संकेतकों - भारत के सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी और सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय का उपयोग करके पिछले साढ़े छह दशकों में राज्यों के सापेक्ष आर्थिक प्रदर्शन की जांच करता है।
- भारत के सकल घरेलू उत्पाद में राज्य की हिस्सेदारी की गणना राज्य के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) को सभी राज्यों के GSDP के योग से विभाजित करके की जाती है।
- सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय की गणना राज्य के प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (NSDP) के अखिल भारतीय प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के% के रूप में की जाती है।
- डेटा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) से लिया गया है।

मुख्य निष्कर्ष

- **दक्षिणी राज्य:** 1991 से पहले, दक्षिणी राज्यों ने अपेक्षित प्रदर्शन नहीं दिखाया था। हालाँकि, 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद से, दक्षिणी राज्य अग्रणी प्रदर्शनकर्ता के रूप में उभरे हैं।
 - 2023-24 में, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल और तमिलनाडु ने मिलकर भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30% का योगदान दिया।
 - इसके अतिरिक्त, 1991 के बाद सभी दक्षिणी राज्यों की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से अधिक हो गई।
- **पश्चिमी राज्य:** महाराष्ट्र ने लगभग पूरी अवधि के दौरान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सबसे अधिक हिस्सा बनाए रखा है।
 - गुजरात का हिस्सा तेज़ी से बढ़ना शुरू हुआ- 2000-01 में 6.4% से 2022-23 में 8.1% तक।
 - गुजरात और महाराष्ट्र दोनों की प्रति व्यक्ति आय 1960 के दशक से राष्ट्रीय औसत से अधिक रही है।
 - गोवा ने प्रति व्यक्ति आय के मामले में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, इसकी सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय 1970-71 से दोगुनी हो गई है।
- **उत्तरी राज्य:** दिल्ली और हरियाणा ने उल्लेखनीय रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है, जबकि पंजाब की अर्थव्यवस्था 1991 के बाद खराब हुई है।
 - इस अवधि के दौरान दिल्ली ने भारत के सकल घरेलू उत्पाद में अपनी हिस्सेदारी 1.4% से बढ़ाकर 3.6% कर ली है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में हरियाणा की हिस्सेदारी अब पंजाब से अधिक है, और इसकी सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय 2023-24 में पंजाब की 106.7% की तुलना में 176.8% तक पहुँच गई है।
- **पूर्वी राज्य:** पश्चिम बंगाल, जो 1960-61 में राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 10.5% के साथ तीसरा सबसे बड़ा हिस्सा रखता था, अब 2023-24 में केवल 5.6% का हिस्सा है।

- पश्चिम बंगाल की प्रति व्यक्ति आय 127.5% से घटकर 2023-24 में 83.7% हो गई है।
- अविभाजित बिहार की सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय 1960-61 में 70.3% थी, जो विभाजित बिहार राज्य के लिए 2000-01 में घटकर 31% रह गई।
- ओडिशा की प्रति व्यक्ति आय 1990-91 में 54.3% से बढ़कर 2023-24 में 88.5% हो गई।
- **मध्यवर्ती राज्य:** 1960-61 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी 14.4% थी। हालांकि, इसके बाद इसकी हिस्सेदारी में गिरावट शुरू हो गई, जो विभाजन के बाद भी जारी रही।
 - मध्य प्रदेश में गिरावट का पांच दशक का दौर रहा (1960-61 में 82.4% से 2010-11 में 60.1%)। इसकी सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय 2010-11 में 60.1% से बढ़कर 2023-24 में 77.4% हो गई।
- **पूर्वोत्तर राज्य:** 1980-81 में सिक्किम की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से कम थी।
 - हालांकि, 2000-01 में इसकी प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत के लगभग 100% से बढ़कर 2023-24 में 320% हो गई।
 - असम, जिसकी प्रति व्यक्ति आय शुरू में राष्ट्रीय औसत से थोड़ी अधिक थी, में 2023-24 में 73.7% तक की गिरावट देखी गई।

राज्यों के बीच क्षेत्रीय असमानताओं के कारण

- **असमान संसाधन वितरण:** खनिज, उपजाऊ भूमि और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधन असमान रूप से वितरित हैं, जिससे कुछ राज्यों को दूसरों की तुलना में अधिक लाभ होता है।
- **बुनियादी ढांचे में अंतर:** बेहतर बुनियादी ढांचे (सड़क, बिजली, बंदरगाह) वाले राज्य अधिक निवेश और विकास को आकर्षित करते हैं, जिससे विकास में असमानता होती है।
- **औद्योगीकरण:** औद्योगिक राज्यों में तेजी से आर्थिक विकास होता है, जबकि सीमित उद्योगों वाले राज्य अविकसित रह जाते हैं।
- **शासन और नीति कार्यान्वयन:** कुशल शासन और नीतियों वाले राज्य खराब नीति निष्पादन तथा शासन संबंधी मुद्दों वाले राज्यों की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं।
- **मानव पूंजी और शिक्षा:** बेहतर शैक्षिक सुविधाओं और कुशल श्रम शक्ति वाले राज्य अधिक व्यवसायों को आकर्षित करते हैं, जिससे आर्थिक विकास होता है, जबकि अन्य कम मानव विकास सूचकांकों के कारण पीछे रह जाते हैं।

निष्कर्ष

- समग्र रूप से, देश के पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र दूसरों से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं, साथ ही उत्तर के कुछ भागों में भी उल्लेखनीय सफलता देखी गई है।
- देश का पूर्वी भाग चिंता का विषय बना हुआ है।
- पश्चिम बंगाल को छोड़कर समुद्री राज्यों ने स्पष्ट रूप से अन्य राज्यों से बेहतर प्रदर्शन किया है।
- यहां तक कि तटीय राज्य ओडिशा, जो परंपरागत रूप से पिछड़ा हुआ राज्य था, ने भी पिछले दो दशकों में बेहतर प्रदर्शन किया है।

Source: IE

सिग्नल मॉड्यूलेशन

समाचार में

- सिग्नल मॉड्यूलेशन सूचना प्रसारित करने के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी को सुव्यवस्थित करता है, जैसे टीवी पर समाचार या रेडियो पर संगीत।

मॉड्यूलेशन

- इलेक्ट्रॉनिक्स में मॉड्यूलेशन, सूचना संकेत के अनुसार तरंग की एक या अधिक विशेषताओं को परिवर्तित कर रेडियो-आवृत्ति वाहक तरंग पर सूचना (आवाज़, संगीत, चित्र या डेटा) अंकित करने की तकनीक है।
- मॉड्यूलेशन के विभिन्न रूप हैं, जिनमें से प्रत्येक को वाहक तरंग की एक विशेष विशेषता को परिवर्तन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- मॉड्यूलेशन विभिन्न संकेतों को बिना किसी हस्तक्षेप के सह-अस्तित्व में रहने की अनुमति देता है।
 - डिजिटल प्रसारण स्थिर शोर से कम प्रभावित होते हैं, जिससे संचार तकनीकें बेहतर होती हैं।

मॉड्यूलेशन के प्रकार:

- **आवृत्ति मॉड्यूलेशन (FM):** इसमें सूचना देने के लिए तरंगों की आवृत्ति को परिवर्तित करना सम्मिलित है (उदाहरण के लिए, डॉट्स के लिए निकट दूरी वाली तरंगों के साथ मोर्स कोड)।
 - FM का व्यापक रूप से FM रेडियो प्रसारण में उपयोग किया जाता है, जहाँ ध्वनि की गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है।
 - यह AM की तुलना में शोर और हस्तक्षेप के लिए बेहतर प्रतिरोध प्रदान करता है।
- **एम्पलीट्यूड मॉड्यूलेशन (AM):** इसमें आवृत्ति को स्थिर रखते हुए तरंगों के आयाम को परिवर्तित करना सम्मिलित है (उदाहरण के लिए, डॉट्स और डैश को दर्शाने के लिए भारी और हल्के पथरों का उपयोग करना)।
- **फ़ेज़ मॉड्यूलेशन (PM):** यह संदेशों को एनकोड करने के लिए तरंगों के चरण को परिवर्तित करता है, जिससे स्पष्ट डिजिटल ट्रांसमिशन की अनुमति मिलती है क्योंकि यह आयाम में उतार-चढ़ाव से कम प्रभावित होता है
 - PM का उपयोग कुछ डिजिटल संचार प्रणालियों और रडार अनुप्रयोगों में किया जाता है।

मॉड्यूलेशन के उपयोग:

- **रेडियो प्रसारण:** रेडियो प्रसारण के लिए AM और FM दोनों मॉड्यूलेशन का उपयोग किया जाता है।
 - AM लंबी दूरी तय करता है लेकिन हस्तक्षेप के लिए अतिसंवेदनशील होता है।
 - FM बेहतर ध्वनि गुणवत्ता प्रदान करता है और संगीत के लिए आदर्श है।
- **टेलीविजन प्रसारण:** टीवी सिग्नल भी मॉड्यूलेट किए जाते हैं (सामान्यतः वेस्टीजियल साइडबैंड मॉड्यूलेशन का उपयोग करके)। यह हमें स्पष्ट ऑडियो और वीडियो के साथ अपने पसंदीदा शो देखने की अनुमति देता है।

- **सेलुलर संचार:** मोबाइल फोन सेलुलर नेटवर्क पर आवाज और डेटा संचारित करने के लिए विभिन्न मॉड्यूलेशन तकनीकों का उपयोग करते हैं।
- **वायरलेस इंटरनेट(Wi-Fi):** Wi-Fi सिग्नल को डिवाइस के बीच वायरलेस तरीके से डेटा ले जाने के लिए मॉड्यूलेट किया जाता है।
- **सैटेलाइट संचार:** सैटेलाइट लंबी दूरी पर सिग्नल रिले करने के लिए मॉड्यूलेशन का उपयोग करते हैं।

क्या आप जानते हैं?

- डिजिटल ट्रांसमिशन असतत सिग्नल (0 और 1) का उपयोग करता है, जबकि एनालॉग ट्रांसमिशन निरंतर सिग्नल का उपयोग करता है।
- PM डिजिटल है और डेटा ट्रांसमिशन के लिए बेहतर है, जबकि AM और FM का उपयोग एनालॉग रेडियो और टीवी प्रसारण के लिए किया जाता है।

Source:TH

सतत कृषि प्राप्त करने के लिए आवश्यक उपाय

सन्दर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान सम्मेलन में अपने संबोधन के दौरान, RBI के डिप्टी गवर्नर ने ऐसे समाधानों पर प्रकाश डाला, जो सतत कृषि के वित्तपोषण के मुद्दे को सुलझाने में काफी सहायक हो सकते हैं।

सतत कृषि क्या है?

- सतत कृषि से तात्पर्य ऐसी कृषि पद्धतियों से है जो आज की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करती हैं और साथ ही भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों को संरक्षित करती हैं।
- इसका अर्थ है कि ऐसे तरीके अपनाए जायें जो पर्यावरण की रक्षा करें, रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करें और पानी और भूमि का कुशलतापूर्वक उपयोग करें।
- यह दृष्टिकोण उत्पादकता, पर्यावरणीय स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक समानता के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए बनाया गया है।

सतत कृषि के लाभ

- **पर्यावरण संरक्षण:** सतत खेती मिट्टी के क्षरण को कम करती है, पानी का संरक्षण करती है और जैव विविधता को बढ़ावा देती है।
- **आर्थिक स्थिरता:** सतत प्रथाओं को अपनाकर, किसान महंगे रासायनिक इनपुट पर अपनी निर्भरता कम कर सकते हैं, जिससे लाभप्रदता में सुधार होता है।
- **बेहतर खाद्य सुरक्षा:** सतत कृषि मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाकर, फसल विविधता को बढ़ावा देकर और यह सुनिश्चित करके दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा में योगदान देती है कि कृषि प्रणालियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीली हैं।
- **सामाजिक समानता:** FPOs और सहकारी मॉडल छोटे तथा सीमांत किसानों को प्रौद्योगिकी, बाजारों एवं वित्तीय संसाधनों तक पहुँच प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाते हैं।

- इससे उनकी सौदेबाजी की शक्ति बढ़ती है और कृषि लाभों का उचित वितरण सुनिश्चित होता है।

चुनौतियाँ:

- **भूमि की प्रति इकाई कम उत्पादकता:** भारत में प्रमुख रूप से छोटे और खंडित भूमि जोत किसानों के लिए स्थायी प्रथाओं में निवेश करना या अपने खेतों को मशीनीकृत करना कठिन बनाते हैं।
- **वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता:** भारतीय कृषि अत्यधिक सीमा तक वर्षा पर निर्भर है, जिसमें लगभग 60% खेती योग्य क्षेत्र मानसून की बारिश पर निर्भर करता है। यह किसानों को अनियमित मौसम पैटर्न के प्रति संवेदनशील बनाता है, विशेषकर जलवायु परिवर्तन के सामने।
- **कृषि मूल्य अस्थिरता:** मूल्य अस्थिरता किसानों को फसल के आदर्श मौसम के दौरान कम कीमतों पर अपनी उपज बेचने के लिए मजबूर करती है।
 - पर्याप्त वित्तीय बफर या बाजार लिंकेज के बिना, किसान अपनी उपज को रोककर रखने और बेहतर कीमतों की प्रतीक्षा करने में असमर्थ हैं।
 - सीमित कृषि प्रसंस्करण क्षमता और मशीनीकरण के निम्न स्तर से फसल कटाई के बाद नुकसान होता है।
 - किसान अपनी उपज का मूल्य भी नहीं जोड़ पाते हैं, जिससे कम रिटर्न मिलता है।
- **वित्त तक पहुँच:** छोटे किसानों को ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
 - औपचारिक बैंकिंग प्रणाली सामान्यतः बड़े कृषि व्यवसायों का पक्ष लेती है, जिससे छोटे किसानों के पास स्थायी प्रथाओं या प्रौद्योगिकियों में निवेश करने के लिए संसाधन नहीं होते हैं।

सतत कृषि के लिए उठाए गए कदम

- **किसान उत्पादक संगठन (FPOs):** FPOs छोटे और सीमांत किसानों को उनकी उपज को एकत्रित करके, प्रौद्योगिकी तक पहुँच प्रदान करके तथा उनकी बाजार उपस्थिति में सुधार करके समर्थन देने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरे हैं।
 - मार्च 2023 तक, 24,000 से अधिक किसान उत्पादक कंपनियाँ (FPCs) बनाई गईं, जिससे किसानों की संसाधनों और बाजार के अवसरों तक पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- **वेयरहाउस रसीद वित्तपोषण:** वेयरहाउस रसीद वित्तपोषण किसानों को अपनी उपज को संग्रहीत करने और बाद में जब कीमतें अधिक अनुकूल हों, तब बेचने की अनुमति देता है।
 - यह मॉडल कमोडिटी की कीमतों को स्थिर करने में सहायता करता है और किसानों को वित्तीय लचीलापन प्रदान करता है।
- **प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (PSL):** FPO के लिए वित्तपोषण को बढ़ावा देने के लिए, RBI के नियम यह प्रावधान करते हैं कि कृषि से संबंधित गतिविधियों के लिए 2 करोड़ रुपये तक के ऋण PSL के रूप में योग्य हैं।
 - अपनी उपज के सुनिश्चित विपणन में लगे FPO के लिए, 5 करोड़ रुपये तक के ऋण PSL के अंतर्गत आते हैं, जो सामूहिक खेती की पहल के लिए बेहतर वित्तीय सहायता सुनिश्चित करते हैं।

- **जलवायु-स्मार्ट कृषि (CSA):** भारत ने जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियों को अपनाया है, जिसमें उन्नत जल प्रबंधन, सूखा-प्रतिरोधी फसलों और सतत भूमि-उपयोग योजना के साथ फसल उत्पादन प्रणालियों को एकीकृत करना सम्मिलित है।
- **प्रौद्योगिकी एकीकरण और मशीनीकरण:** प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) के तहत "प्रति बूंद अधिक फसल" पहल जैसे सरकारी कार्यक्रम, सूक्ष्म सिंचाई जैसी कुशल जल उपयोग प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
 - इसके अतिरिक्त, कस्टम हायरिंग सेंटर (CHC) जैसी पहलों के माध्यम से मशीनीकरण बढ़ाने से श्रम लागत कम करने और उत्पादकता में सुधार करने में सहायता मिलती है।

आगे की राह

- जलवायु परिवर्तन और स्थिरता दो ऐसे अहम मुद्दे हैं, जिन्होंने हाल ही में वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है।
- इस संदर्भ में, सतत कृषि एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप में उभर कर सामने आती है। इसमें पारंपरिक कृषि पद्धतियों को प्रौद्योगिकी संचालित प्रणालियों में परिवर्तित करना, कृषि वस्तुओं के प्रसंस्करण और संरक्षण तकनीकों को बढ़ाना और खेत स्तर पर मूल्य संवर्धन में योगदान देना सम्मिलित होगा।
- साथ ही, फसल उत्पादन प्रणालियों को जलवायु-स्मार्ट कृषि के साथ-साथ पर्याप्त वित्त के साथ संरेखित करने की आवश्यकता है।

Source: [The Print](#)

संक्षिप्त समाचार

कर्मा महोत्सव

संदर्भ

- विभिन्न राज्यों में जनजातीय जनसँख्या ने 14-15 सितंबर को फसल उत्सव करमा या करम पर्व मनाया।

कर्मा उत्सव

- **क्षेत्र:** यह त्यौहार मुख्य रूप से झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम और ओडिशा राज्यों में मनाया जाता है।
 - यह त्यौहार विशेष रूप से मुंडा, हो, उरांव, बैगा, खारिया और संथाल लोगों के बीच लोकप्रिय है।
 - यह पारंपरिक रूप से भादो/भाद्र महीने में चंद्र पखवाड़े की एकादशी तिथि (ग्यारहवें दिन) को मनाया जाता है, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर में अगस्त-सितंबर के अनुरूप है।
- करमा त्यौहार के केंद्र में करम वृक्ष है, जिस वस्तु से त्यौहार का नाम पड़ा है।
 - पारंपरिक रूप से इसे करम देवता या करमसनी, शक्ति, युवा और जीवन शक्ति के देवता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

- त्यौहार के अंत में, साल के पेड़ों की शाखाओं को इस उम्मीद के साथ खेतों में लगाया जाता है कि करम राजा/देवता उनकी फसलों की रक्षा करेंगे।

Source: [IE](#)

पेरियार ई.वी. रामासामी

सन्दर्भ

- तर्कवादी समाज सुधारक पेरियार ईवी रामासामी को उनकी 146वीं जयंती के अवसर पर याद किया गया।

परिचय

- पेरियार ई.वी. रामासामी का जन्म 1879 में हुआ था।
- वे एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने तमिलों की पहचान तथा आत्म-सम्मान को पुनः प्राप्त करने के लिए आत्म-सम्मान आंदोलन शुरू किया था।
 - उन्हें 'द्रविड़ आंदोलन के जनक' के रूप में जाना जाता है।

राजनीतिक कैरियर:

- पेरियार ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत अपने गृहनगर इरोड में एक कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में की थी।
- हालाँकि, कांग्रेस द्वारा प्रायोजित स्कूल गुरुकुलम में ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण छात्रों के लिए अलग-अलग भोजन के प्रश्न पर, पेरियार ने 1925 में पार्टी से त्यागपत्र दे दिया।
- 1924 के वैकोम सत्याग्रह के दौरान पेरियार की ख्याति तमिल क्षेत्र से परे फैल गई, यह एक जन आंदोलन था जिसमें मांग की गई थी कि निचली जाति के लोगों को प्रसिद्ध वैकोम मंदिर के सामने सार्वजनिक पथ का उपयोग करने का अधिकार दिया जाए।
- 1940 के दशक में, उन्होंने द्रविड़ नाडु की एक द्रविड़ मातृभूमि की कल्पना की, और एक राजनीतिक पार्टी, द्रविड़ कज़गम (DK) शुरू की।

पेरियार ई.वी. रामासामी की विरासत

- एक समाज सुधारक के रूप में, उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक और लैंगिक असमानताओं पर ध्यान केंद्रित किया और उनके सुधार एजेंडे ने आस्था, लिंग और परंपरा के मामलों पर प्रश्न उठाए।
- आत्म सम्मान आंदोलन ने बिना किसी अनुष्ठान के शादियों को बढ़ावा दिया और महिलाओं के लिए संपत्ति के साथ-साथ तलाक के अधिकारों को भी मंजूरी दी।
- उन्होंने 1930 के दशक में सार्वजनिक सम्मेलनों में दलितों द्वारा पकाए गए भोजन के साथ सह-भोज की शुरुआत की।

Source: [IE](#)

ध्रुवीय भँवर

समाचार में

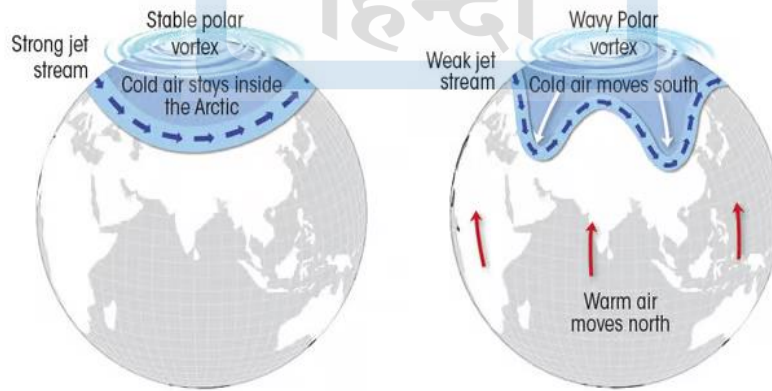
- अंटार्कटिका में ओजोन छिद्र का निर्माण कमजोर ध्रुवीय भँवर के कारण देर से शुरू होता है।

ध्रुवीय भँवर के बारे में

- ध्रुवीय भँवर पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के आसपास कम दबाव और ठंडी हवा का एक बड़ा क्षेत्र है।
- यह हमेशा ध्रुवों के पास उपस्थित रहता है, लेकिन गर्मियों में कमजोर हो जाता है और सर्दियों में मज़बूत हो जाता है।
- "भँवर" शब्द का अर्थ हवा के वामावर्त प्रवाह से है जो ठंडी हवा को ध्रुवों के पास रखने में सहायता करता है।
- उत्तरी गोलार्ध में सर्दियों के दौरान कई बार, ध्रुवीय भँवर फैल जाएगा, जिससे जेट स्ट्रीम के साथ ठंडी हवा दक्षिण की ओर जाएगी।

प्रभाव

- यह गर्मियों के अंत में विकसित होता है, जब उत्तरी ध्रुव पर सूर्य का प्रकाश कम हो जाता है, जिससे ध्रुवीय समताप मंडल की हवा उष्णकटिबंधीय समताप मंडल की हवा की तुलना में ठंडी हो जाती है।
- यह सर्दियों से लेकर वसंत के मध्य तक बना रहता है, जब उत्तरी ध्रुव को अधिक सूर्य का प्रकाश मिलना शुरू होता है, जिससे ध्रुवीय समताप मंडल गर्म हो जाता है।
- सर्दियों के दौरान, भँवर का विस्तार हो सकता है, जिससे आर्कटिक हवा दक्षिण की ओर बढ़ जाती है, जिससे प्रायः अमेरिका, यूरोप और एशिया सहित उत्तरी गोलार्ध में ठंड का प्रकोप होता है।



Source :DTE

खाता एग्रीगेटर (AA) फ्रेमवर्क

समाचार में

- खाता एग्रीगेटर (AA) ढांचे ने तीन साल पहले अपने लॉन्च के बाद से मार्च 2024 तक 42,300 करोड़ रुपये तक के ऋण की सुविधा प्रदान की है।

खाता एग्रीगेटर (AA) के बारे में

- खाता एग्रीगेटर (AA) नेटवर्क, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा 2 सितंबर, 2016 को मास्टर डायरेक्शन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।
- यह एक वित्तीय डेटा-साझाकरण प्रणाली के रूप में कार्य करता है।
- यह गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) को ग्राहकों की वित्तीय जानकारी केवल उनकी स्पष्ट सहमति से एकत्र करने और पुनः प्राप्त करने की अनुमति देता है।
- **महत्व:** यह व्यक्तियों को AA नेटवर्क में विनियमित संस्थानों के बीच अपनी वित्तीय जानकारी को सुरक्षित और डिजिटल रूप से एक्सेस करने तथा साझा करने में सक्षम बनाता है।
 - महत्वपूर्ण बात यह है कि डेटा को केवल व्यक्ति की सहमति से ही साझा किया जा सकता है।
- यह पारंपरिक, लंबी शर्तों और नियमों को अधिक पारदर्शी तथा विस्तृत अनुमति प्रक्रिया से परिवर्तित कर देता है, जिससे उपयोगकर्ता अपने डेटा का चरण दर चरण उपयोग कैसे किया जाता है, इसे नियंत्रित कर सकते हैं।

Source: [BS](#)

रंगीन मछली ऐप

सन्दर्भ

- केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री ने "रंगीन मछली" मोबाइल ऐप लॉन्च किया, जिसे सजावटी मत्स्यपालन क्षेत्र की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

परिचय

- ऐप को ICAR-CIFA (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मीठे पानी की जलीय कृषि संस्थान) द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के सहयोग से विकसित किया गया है।
- यह आठ भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय सजावटी मछली प्रजातियों पर बहुभाषी जानकारी प्रदान करता है, जिससे यह शौक्रीन लोगों, एक्वेरियम की दुकान के मालिकों और मछली किसानों सहित व्यापक दर्शकों के लिए सुलभ हो जाता है।
- इसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक "एक्वेरियम की दुकानें खोजें" टूल है, जो उपयोगकर्ताओं को दुकान मालिकों द्वारा अपडेट की गई एक गतिशील निर्देशिका के माध्यम से आस-पास की एक्वेरियम की दुकानों का पता लगाने, स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा देने और सजावटी मछली और एक्वेरियम से संबंधित उत्पादों के लिए विश्वसनीय स्रोतों से उपयोगकर्ताओं को जोड़ने की अनुमति देता है।

Source: [PIB](#)

ऑनलाइन सूचना और डेटाबेस एक्सेस या पुनर्प्राप्ति (OIDAR) सेवाएँ

सन्दर्भ

- GST इंटेलिजेंस महानिदेशालय (DGGI) की एक रिपोर्ट के अनुसार, ऑनलाइन सूचना और डेटाबेस एक्सेस या रिट्रीवल (OIDAR) सेवाओं के विभिन्न प्रदाता, "अद्भुत" राजस्व क्षमता वाले "अपेक्षकृत अप्रयुक्त" क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परिचय

- OIDAR सेवाएँ वे हैं जो इंटरनेट या इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क के ज़रिए दी जाती हैं और जिनकी आपूर्ति सूचना प्रौद्योगिकी के बिना अनिवार्य रूप से असंभव है।
- इसमें क्लाउड सेवाएँ, डिजिटल सामग्री, ऑनलाइन गेमिंग, ऑनलाइन विज्ञापन आदि जैसी सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला सम्मिलित है।
- जब ऐसी सेवाएँ किसी अपतटीय इकाई द्वारा किसी गैर-कर योग्य प्राप्तकर्ता को प्रदान की जाती हैं, तो आपूर्तिकर्ता पंजीकरण प्राप्त करने और उस पर GST का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होता है।
- DGGI ने कहा कि चूंकि OIDAR सेवा प्रदाता विदेश में स्थित हैं, इसलिए GST प्रवर्तन में यह एक चुनौती बन जाता है और इसलिए यह क्षेत्र अपेक्षकृत अप्रयुक्त रहता है।
- DGGI ने अपतटीय आपूर्तिकर्ताओं के संबंध में डेटा/सूचना प्राप्त करने के लिए कोडेक्स प्लेटफॉर्म पर पंजीकरण करने जैसे कदम उठाने का सुझाव दिया, साथ ही विदेशी मुद्रा लेनदेन से संबंधित प्रासंगिक डेटा प्राप्त करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के साथ समन्वय करने का भी सुझाव दिया।

Source: ET

क्लेष्टोपैरासाइटिज्म

समाचार में

- शोधकर्ताओं का सुझाव है कि क्लेष्टोपैरासाइटिज्म H5N1 एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस के संचरण का एक मार्ग हो सकता है।

क्लेष्टोपैरासाइटिज्म के बारे में

- क्लेष्टोपैरासाइटिज्म (या क्लेष्टोपैरासाइटिज्म) परजीविता का एक रूप है, जिसमें एक जानवर दूसरे जानवर द्वारा एकत्र किए गए भोजन या अन्य संसाधनों को चुरा लेता है।
- क्लेष्टोपैरासाइट या तो भोजन को पकड़ने के लिए दूसरे जानवर का इंतजार करता है या उत्पीड़न या आक्रामकता के माध्यम से जानवर को अपना शिकार छोड़ने के लिए मजबूर करता है।
- क्लेष्टोपैरासाइटिज्म में शामिल होने से, क्लेष्टोपैरासाइटिज्म ऊर्जा को संरक्षित करता है जिसे वह अन्यथा शिकार या एकत्रित करने में उपयोग करता है।
- क्लेष्टोपैरासाइटिज्म होने वाला जानवर उन संसाधनों को खो देता है जिन्हें एकत्रित करने के लिए उसने मेहनत की है, जो उसके अस्तित्व को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

Source: TH

बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन (BWM) नियम, 2022

सन्दर्भ

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन (BWM) नियम, 2022 के उल्लंघन पर दंडित करने के लिए कड़े पर्यावरण क्षतिपूर्ति (EC) दिशानिर्देश प्रस्तुत किए हैं।

बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन (BWM) नियम, 2022

- इन नियमों को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा अधिसूचित किया गया है।
- ये सभी प्रकार की बैटरियों पर लागू होते हैं, चाहे उनकी रसायन विज्ञान, आकार, आयतन, वजन, सामग्री संरचना और उपयोग कुछ भी हो।
- उत्पादक (निर्माता, आयातक) को बाजार में प्रस्तुत की जाने वाली बैटरी के लिए विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी का दायित्व होगा और उत्पादक को संग्रह और पुनर्चक्रण लक्ष्यों को पूरा करना होगा।
- बैटरी के उत्पादक, पुनर्चक्रक और नवीनीकरणकर्ता केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) द्वारा विकसित ऑनलाइन केंद्रीकृत पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण करेंगे।
 - पोर्टल EPR दायित्वों की पूर्ति की जवाबदेही, पता लगाने और पारदर्शिता में सुधार करने में सहायता करेगा।
 - यह पोर्टल BWM नियम, 2022 के कार्यान्वयन से संबंधित आदेशों और दिशानिर्देशों के संबंध में एकल बिंदु डेटा भंडार के रूप में कार्य करेगा।
- इन उपायों का उद्देश्य उचित अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देना और पूरे देश में पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाना है।

Source: BS

खेलों में डोपिंग के विरुद्ध यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

समाचार में

- भारत ने COP9 ब्यूरो की दूसरी औपचारिक बैठक और खेल में डोपिंग के विरुद्ध यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के तहत निधि अनुमोदन समिति की तीसरी औपचारिक बैठक की मेजबानी की।

परिचय

- इस बैठक का उद्देश्य डोपिंग के विरुद्ध लड़ाई में वैश्विक सहयोग को आगे बढ़ाना है, जिसमें खेल में ईमानदारी, निष्पक्षता और समावेशिता के महत्व पर बल दिया जाएगा।
- डोपिंग के व्यापक प्रभाव हैं जैसे कि यह खेल की विश्वसनीयता को हानि पहुंचा सकता है, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा के सिद्धांत को कमजोर कर सकता है, और खिलाड़ियों के बीच गंभीर अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।
- वाडा जैसे संगठन वैश्विक स्तर पर डोपिंग विरोधी नीतियों को लागू करते हैं।
 - WADA की स्थापना 1999 में हुई थी और इसका मुख्यालय मॉन्ट्रियल, कनाडा में है। इसे अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC) की पहल पर बनाया गया था।

- WADA का गठन लॉज़ेन घोषणा के बाद हुआ, जिसका उद्देश्य खेलों में डोपिंग से निपटने के लिए एक स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय संगठन बनाना था।

डोपिंग के विरुद्ध यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

- **अपनाया गया:** 2005 में पेरिस, फ्रांस में।
- **उद्देश्य:** खेलों में डोपिंग की रोकथाम और उसके खिलाफ लड़ाई को बढ़ावा देना, जिसका अंतिम लक्ष्य डोपिंग को पूरी तरह से समाप्त करना है।
 - यह वैश्विक स्तर पर डोपिंग रोधी नियमों और कानूनों को सुसंगत बनाने के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करता है, जिससे सभी खेलों में निष्पक्ष और समान खेल का मैदान सुनिश्चित होता है। यह एकमात्र अंतरराष्ट्रीय संधि है जो डोपिंग रोधी पर केंद्रित है, जो वैश्विक स्तर पर डोपिंग के विरुद्ध लड़ने के लिए देशों को एक साथ लाती है।

Source: PIB

